शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 15 | उदयपुर शुक्रवार 01 सितम्बर 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

हमारे में चुनौतियों को चुनने और चुनौती देने का माद्दा : मोदी

- उदयपुर के खेलगांव की ऐतिहासिक सभा में 15,100 करोड़ की योजनाओं का श्रीगणेश

डॉ. तुक्तक भानावत

उदयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को उदयपुर के खेलगांव में 9490 करोड़ रुपए की लागत के 11 राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण कार्य का भूमि पूजन एवं 5610 करोड़ की लागत से 12 राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण कार्य एवं 48 अन्य राष्ट्रीय राजमार्गों के सड़क सुरक्षा कार्य का बटन दबाकर डिटिजल लोकार्पण किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राजस्थान के इतिहास में आज का दिन अद्भुत है जहां एक साथ 15 हजार करोड़ से अधिक की योजनाओं का शिलान्यास व लोकार्पण हो रहा है। मोदी ने पिछली सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि वह ऐसे हालात छोड़ कर गई कि सारी व्यवस्थाएं चरमरा गई हैं, बुराइयां इतनी प्रवेश कर चुकी हैं, अगर कोई ढीला ढाला इंसान होता तो शायद उसको देखकर डर जाता लेकिन हम जरा अलग मिट्टी के बने हैं। चुनौतियों को चुनने की भी आदत है, चुनौती को चुनौती देने की भी आदत है और चुनौतियों को स्वीकार करते हुए, रास्ते खोलते हुए मंजिल की ओर देश को ले जाने के लिए जी-जान से जुटने का माद्दा भी रखते हैं। सभा में राज्यपाल कल्याणसिंह, केंद्रीय मंत्री राज्यवर्धनसिंह राठौड़, अर्जुन मेघवाल, गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, परिवहन मंत्री युनूस खान, उच्च शिक्षामंत्री किरण माहेश्वरी, पीडब्ल्यूडी मंत्री श्रीचंद कृपलानी, सांसद अर्जुन मीणा, केंद्रीय मंत्री पीपी चौधरी सहित कई मंत्री, विधायक, सांसद मौजूद थे। यहां फिल्म 'प्रगति के पथ पर चल पड़ा राजस्थान' का भी प्रदर्शन किया गया।

अपने उद्बोधन की शुरूआत मेवाड़ी भाषा से करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इस धरती पर महाराणा प्रताप, राणा पूंजा, भामाशाह, हकीम खां सूरि, पन्नाधाय, हाड़ीरानी और मीरां जैसी विभूतियां हुईं और जहां प्रभु एकलिंगनाथ स्वयं बिराजते हों उस त्याग, तपस्या और भक्ति की वीर भूमि को मेरी 'घणी खम्मा' (बहुत-बहुत नमन)। प्रधानमंत्री ने कहा कि जिस योजना को हम प्रारंभ करेंगे हम ही उसे पूरा करने का माद्दा रखते हैं। हमें राजनैतिक रोटियां सेकना मंजूर नहीं। हम कार्य को शुरू करने के साथ ही उसे पूर्ण करने का जज्बा रखते हैं। ऐसा नहीं कि कोई योजना प्रारंभ की और वह 10 साल तक पूरी न हो। इससे जनता का धैर्य भी टूट जाता है और उसका खर्चा भी कई गुना बढ़ता रहता है। मोदी ने कहा कि कोटा का ब्रिज बनाने में पिछली सरकार ने 11 साल निकाल दिये तब भी उस योजना को वह पूरा नहीं कर सके जबकि वह योजना मात्र 300 करोड़ की थी और

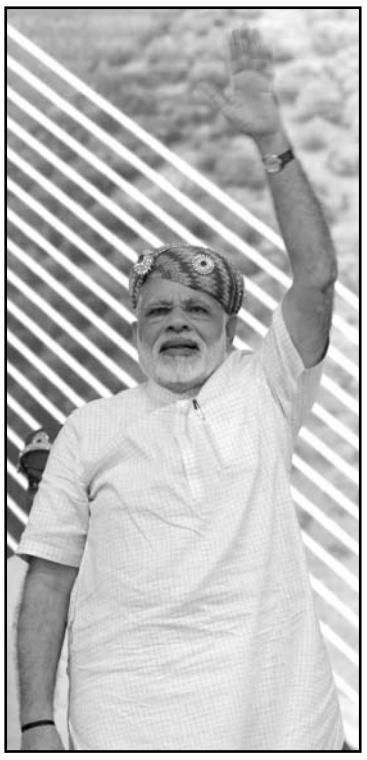

इस सरकार ने अपने अल्प समय में इस प्रोजेक्ट को पूरा कर दिया है जिसका आज लोकार्पण हुआ है। इससे सरकार के कार्य में फर्क समझने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रदेश में तीन साल के भीतर 5600 करोड़ के कार्यों का लोकार्पण किया है।

राजस्थान की महिमा का बखान करते हुए मोदी ने कहा कि यहां की

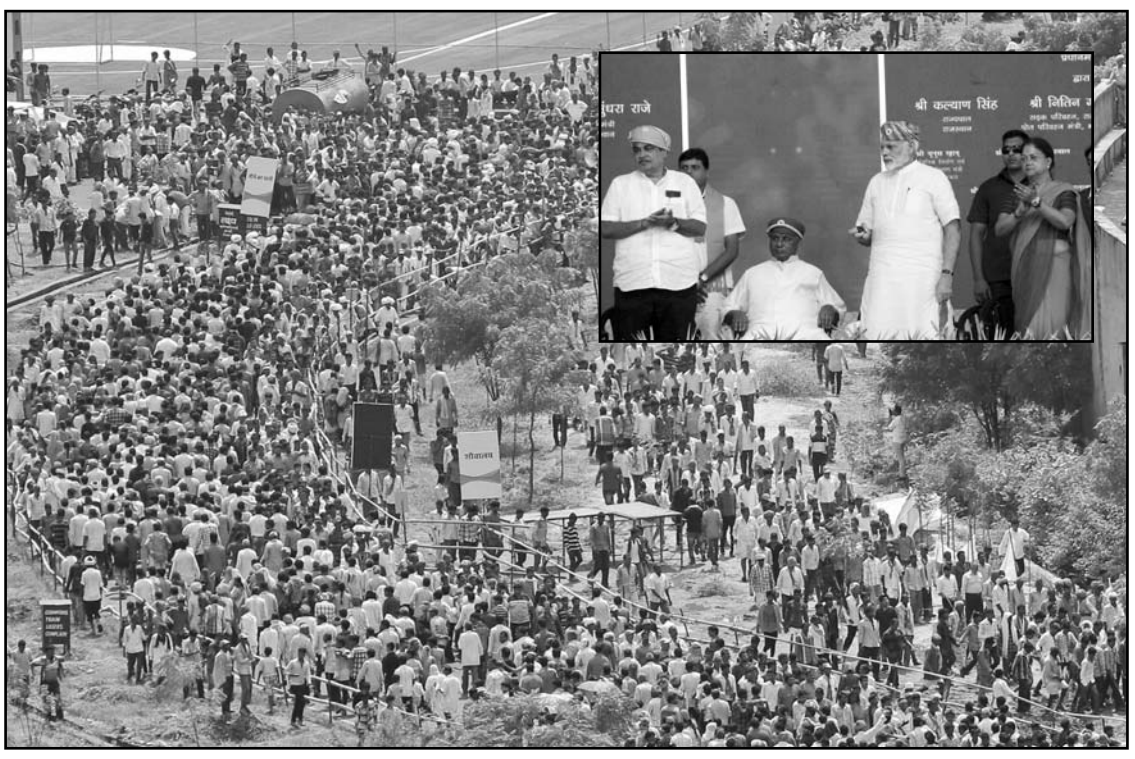

सड़कें पैसे उगलने की ताकत रखती हैं। यहां की धरती में वह चुंबकीय शक्ति है जो देश के सैलानियों को ही नहीं विदेश तक के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। पुष्कर के मेले में जहां लोग धर्म और अध्यात्म का पावन सान्निध्य पाते हैं वहां झीलों की नगरी उदयपुर में उनका मन यहां के सौंदर्य से अभिभूत हो जाता है। दुनिया भर के पर्यटकों को जैसलमेर की मरु भूमि सहित अन्य पर्यटन स्थनों पर जाने से एक नई जिंदगी का एहसास होता है। यहां आने वाला हर पर्यटक अपनी जेब खाली करने आता है। उसके मार्फत यहां माला बेचने वाला, प्रसाद बनाने वाला, ओटो रिक्शा वाला, गेस्ट हाऊस चलाने वाला तथा हेडीक्राफ्ट की दुकान पर बैठने वाला अपनी जेब भरता है। 'चाय बेचने वाला भी कमाता है।'

केन्द्रीय सड़क, परिवहन एवं जहाजरानी मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि 6500 करोड़ की योजनाएं इस सरकार के कार्यकाल में शुरू हुई और इसी में पूरी हुई। वह पुराना समय था जब योजनाएं फंसी हुई रहती थी। अब योजनाएं तीव्र गति से पूरी हो रही है। अब सरकार अगली योजनाएं सभी बाधाओं को दूर करते हुए प्रारंभ करेगी। उन्होंने प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री पर तंज कसते हुए कहा कि कोटा के हेगिंग ब्रिज को पूरा नहीं कर सके जबकि 2014 तक उनकी सरकार थी। हमारी सरकार आई और हमने इस योजना को प्राथमिकता से लेते हुए पूरा किया। जयपुर का रिंग रोड़ का टेंडर भी जारी कर दिया गया। उन्होंने कहा कि घोषणाएं कर पूरी नहीं करना यह पिछली सरकार की आदत थी। यह सरकार तो घोषणा के साथ कार्य को अंजाम तक पहुचाती है। जयपुर से दिल्ली तक की दूरी अब ढाई घंटे में पूरी की जा सकेगी। पुरानी सरकार की निष्क्रियता के कारण 57 सड़कों का कार्य बंद पड़ा था जिसे इस सरकार ने चालू किया। इस मौके पर नितिन गडकरी ने प्रदेश को कई सौगातें दी जिसमें उदयपुर में 400 करोड़ की लागत से बनने वाले एलिवेटर रोड़ की भी घोषणा की। गड़करी ने राजस्थान के चहुमुखी विकास पर खर्च की जाने वाले कई योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि यहां के मुख्यमंत्री और विधायक जो भी मेरे पास योजना लेकर आए, मैंने किसी को भी ना नहीं किया। उन्होंने एक रुपया मांगा, मैंने डेढ़ रुपया दिया।

मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कहा कि मोदी के साहस, समर्पण, मेहतन व नीतियों की वजह से हमारा देश नया भारत बनने की ओर निकल पड़ा है। आपकी सोच व मजबूत इरादों की वजह से देश विश्वशक्ति बन रहा है। देश में जगह-जगह कमल खिलने लगे हैं। सबका साथ सबका विकास प्रधानमंत्री के नारे पर राज्य सरकार कार्य कर रही है। जिसके कारण प्रदेश में शिक्षा का वातावरण बदला है। सभी ग्राम पंचायतों में बारहवीं तक के स्कूल बनाने का संकल्प किया।

सरकारी स्कूलों का समानीकरण किया, नामांकन बढ़ा है। बेटी बचाओ सोच को बढ़ाया है। जयपुर के एजुकेशन फेस्टिवल में बुद्धिजीवियों में सोच का आदान-प्रदान हुआ। बेटियों को राजश्री योजना से जोड़ा गया। नारी शक्ति को परिवार की मुखिया बनाकर भामाशाह योजना चलाई। अब पैसा बिना छीजत के अकाउंट्स में आने लगा है। पांच करोड़ खातों में आठ हजार करोड़ रुपया आ चुका है। कन्या जन्म के बाद सरकारी स्कूल में उच्च स्तर की शिक्षा पूर्ण रूप से निशुल्क है। प्रधानमंत्री की उज्जवाला योजना के तहत गांव-गांव ढाणी-ढाणी बहनों को गैस कनेक्शन दिये हैं।

स्मृतियों के शिखर (37) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रेत की लहरों पर अटकी लोकसंगीत की मटकी (1)

लोक में रहते-रमते अपने अध्ययन, अनुभव तथा चिंतन-मनन से विद्वानों, प्रबुद्धजनों एवं प्रज्ञा मनीषियों ने जो श्रवण-लेखन दिया वही शास्त्र बन गया। इस दृष्टि से वह हर विधा-विद्या चाहे नृत्य गान संगीत की हो या चित्र स्थापत्य की हो, एक परिपक्व, निखरी और सधी हुई बनकर दृष्टिगत हुई। इन सबका आधार लोकसम्मत लोक यानी जन-जन की संगति लिए है। उसी से ज्ञान का भंडारा निकला। इस दृष्टि से देखा जाय तो सारे शास्त्र लोक के ही ककहरे हैं।

8 अक्टूबर 1972 को कलामंडल में मेरे संयोजन में आयोजित एक अखिल भारतीय लोककला संगोष्ठी में आकाशवाणी के महानिदेशक जगदीशचन्द्र माथुर ने कहा था कि आकाशवाणी के क्षेत्रीय केंद्रों को बहुसंख्यक जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिए राजस्थान के जैसलमेरी, बाड़मेरी, बाकानेरी, जोधपुरी तथा उदयपुरी परंपराशील गायक-गायिकाओं और उनकी शैलियों को उद्‌भासित किया। पहलेपहल प्रारंभ किया गया यह प्रयोग पूरे देश में सम्मोहक तथा प्रभावोत्पादक रहा। ये कलाकार ही सर्वाधिक सुने गये। सर्वाधिक श्रोताओं की पसंद बने और सर्वाधिक श्रोताओं की मांग पर ये सर्वाधिक बार सुने जाते रहे।

इसी तथ्य को सार्थक रूप से समझने और गहनतापूर्वक अध्ययन करने की दृष्टि से भारतीय लोककला मंडल ने रेगिस्तानी इलाके जैसलमेर क्षेत्र के लोकसंगीत से जुड़े कलावंतों की संगीत धरोहर से रू-ब-रू होने का सोच वहां की काशीनाथ धर्मशाला में 13, 14 तथा 15 फरवरी 1973 को यह त्रिदिवसीय आयोजन किया। यह आयोजन इसलिए भी अधिक सफल रहा कि 150 से अधिक कलावंतों से हम प्रत्यक्षत: मिलसके। उनसे बातचीत करसके। उनके गायकी-घरानों की तह में जासके और उनमें प्रचलित लोकसंगीत की अनेक विधाओं की रेकार्डिंग करसके।

इस समारोह में कलाकारों की एक-से-एक उत्कृष्ट गायकियों को सुन सर्वथा एक नई दिशा का बोध हुआ और यह विश्वास पक्का बना कि शास्त्रीय संगीत के उद्‌भव एवं विकास की आधारभूमि की यदि किसी को तलाश करनी हो तो वह इन संगीतकारों का सान्निध्य प्राप्त कर वह सबकुछ प्राप्त कर सकता है जिसकी खोज अब भी बनी हुई है।

इस समारोह के लिए एक ऐसा प्रपत्र भी तैयार किया जिससे उधर के संगीत घरानों, गायकियों तथा उनसे जुड़ी क्षेत्रीय विधाओं के संबंध में हमें यथेष्ट जानकारी सुलभ हो सके। लगभग हर गायक ने अपनी-तीन-तीन, चार-चार पीढ़ी से भी अधिक तक की जानकारी दी। तीन गायक तो ऐसे मिले जिन्होंने अपनी नौ से लेकर सोलह पीढ़ी तक का परिचय दिया। ये गायक थे-

(अ) कादरबख्श पिता इस्माइलखां। पोस्ट बड़ोड़ा। वंशावली: इस्माइलखां-सांगेखां-रायचंद-जीवना- बादरा-मेहरी-मीठा-हाजी-खेवरे।

(ब) चिमो पिता अजीत। गांव साधणा। पो. रामगढ़। वंशावली: अजीत-भांजो-भानो-मीठू-कोबड़ो-रामधण-भावु-डोसो-टीकम।

(स) सदक पिता सोढ़ा। गांव कनोई। पो. सम। वंशावली : सोढ़ा-नभेखां-करमाली-अमीदा-सुरताण-गरीबखां-दरगाईखां-करीमेखां-बीजेखां-जीमेखां-मेरूखां-अड़ेखां-मेरूखां-बादलखां-रायधणखां-सालूखां।

इन मांगणियारों में जीणा, गेला, ढोली, देधड़ा, गुणसार, सीधर, थायम, मिरासी, बोधर, कालेट, जेता, बाबर, खालतेरा, बामणिया, राड़का, टीकम, डगा, खाड़ेड़ा, तथा कालसी नामक खांपें पाई गई। इनको मांगने वाले इधर गढ़मंगा, फकीर, तकियेवाला, सईद हुसैनी बामण तथा लोठावाला लोग हैं। इनके अतिरिक्त इधर की गायक जातियों में मिरासी, ढाढ़ी, ढोली, जोगी, नट तथा पड़ भोपा निवास करते हैं।

मांगणियारों में प्रमुख वाद्य कमायचा, ढोलक, पेटी, मुरला, सुरिंदा तथा मोरचंग प्रचलित हैं। राठौड़, बारठ, जंजभाटी, हाथी एवं भाटी गोगली इनके जजमान हैं। इनकी गायकी की मुख्य रोगों में सूब, आसा, मांड, पास, सोरठ, धानी, प्रभाती, भैरवी, जंगला, खमाज, गूड़मलार, टोड़ी, बिलावल, तलंग, सामेरी, विरागड़ा, काफी, पूरबी, पीला, जोग, भीम, सालंग, मलार, भेरवास, सामकिलाण, ढोलामारू, पूरबो है।

इन मांगणियारों में विविध प्रसंगपरक जो गतादि प्रचलित हैं वे निम्नांकित हैं-

(1) बालजन्म के गीत - हालरिया, रूमाल, जांजरिया, गीगो, धानरिया, पोमचा, जच्चो, पालणिया तथा बाल विषयक दूहे।

(2) बनड़ा - केसरियो, सुदो सरदार बनड़ो, फेंटो बनड़ो, बना पांच बरस का, चूड़ले रो बनड़ो, मेंदी को बनो, सालूपटा को बनड़ो।

(3) विवाह के गीत - बनड़ा के अतिरिक्त चूड़ला, बधावा, बरसा, कामण, तोरणिया, हल्दीपीठी, कंवर कलेवो, फेरा, पडेला, माहेरा, हाजर कागद, झिरावा, बींद के प्रथम पोशाक धारण करने का सोलो, घोड़ी, हेली, अरणकी, मदकर (सीख), खम्मा-बरात आगमन, विनाक, सांजी, मुजरा, घोड़ो नवलखो गाल।

(4) कथा गीत- नागजी, खींवजी-आभलदे, जस्मा-ओडन, सैणल-बीजानंद, मूमल-महेन्द्र, हीर-रंजो, लैला-मजनूं, ससि-पुन्नू, उमर-मारवी, रणमल, रतन-राणा, काछबिया-राणा, रूपांदे, सोडा, रूप-बसंत, आसा-डाबी, लाखा-राणों।

(5) अन्य गीत- डोरो, ईडोणी, कांगसियो, लसकरियो, धोरा का गीत, दासी, गुलाम, हाजर, मणिहारा, आयल, बायरियो, बेकरियो (ऊंट के खाने का कंटीला), लेरांबाई, निमोली, गोरबंद, हेली, पपैयो, सूवटियो, पणिहारी, बरसालू, करियो, भैया (श्रमगीत), मोरिया, शिकार, घोड़ा व ऊंट गीत, जलाल, जलालो, आगमी ढोलो, राइको, गणगौर, ताटका, लांगोदर, पंखियो, केवड़ो, चिड़कली, लवारियो, बिरधो, लेहरू।

(6) जैसलमेर राजपुरुष एवं राठौड़ विषयक गीत - रंगभरी विदाई राजाजी रो, जुवारसिंहजी, जगमालसिंहजी, खावड़िया राजपूत, गजल गिरधरसिंह, केसरसिंह दरबार की भावन, भेरजी भाटी रा दूहा, बागजी कोटड़िया रा दूहा, सवाईसिंह राठौड़ की धमाल, नाथूसिंह जेतमानसिंह के गीत, मूलाजी जैसलमेर दरबार, मलिनाथजी, भंवरजी ठाकर, राजसिंहजी भाटी, बलातसिंह बाखासर का गीत, साबलसिंहजी की भावन, मदछक राजा, गड़सीसर राजा की भावन, कलाणी जैसलमेर अंदाता री, मूरचंद भाटी की भावन।

सोरठ राग में सूमरदे बालोचण, रतन राईको, भंवरजी एवं काछबो तथा खूब राग में रायधण, मदकर, परताब, सियाला री बराणी, काकरिया रो कोट तथा अवलु घाट री इधर खूब चलती है। जांगड़े, दूहे तथा दोढ़े भी इधर की गायकी के प्रमुख अंग हैं।

दोढ़ों में सवलसिंह, रामचंद्र, अंतरिया तथा खमाजी के दोढ़े ; दूहों में जेठुआ, दयारामा, राजिया, जैसिया, नारणा, मूमल-महेन्द्रा, ढोला-मारू, लाखेराव, जला, भेरजी भाटी, बागजी, कोटड़िया तथा आसा-डाबी के दूहे एवं जांगड़ों में रतना राईका, भमरजी, ढोलो, साढ़ो घाट रो, सोनाकेरो चकलो, घोड़लिया, मदकर, धमालड़ी, कांकेरिया रा कोट, अरणी, जलाल, शिवजी, बिलावल आदि प्रिय हैं।

हमारे लिए यह सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि हमने चौदह घण्टे का अभूतपूर्व रेकार्डिंग किया। वहां से लौटकर जब मैंने कलामंडल के संचालक देवीलाल सामर को उस क्षेत्र की अतुलनीय उपलब्धि की जानकारी दी तो उन्हें बड़े गौरव की अनुभूति हुई। बोले, काश ! हम सब तरह से सामर्थ्यवान होते ताकि उन कलाकारों को धनाभाव से गुजारा नहीं करना पड़ता लेकिन हमें शीघ्र ही ऐसा कुछ काम करना चाहिए जिससे उन कलाकारों की पहचान बने। वे सरकार की निगाहों में आएं। उनका यथोचित मान-सम्मान हो और पूरे विश्व में राजस्थानी लोकसंगीत की दुन्दुभि बजे। इसके लिए सामरजी ने कलामंडल में लोकानुरंजन मेले का शुभारंभ किया जिसने पूरे देश का ध्यान आकृष्ट किया।

लोकसंगीत की ऐसी खदान को पहले किसी ने नहीं खोदा। न जाने ऐसी कितनी खदानें रेत के महासमंदर में शान्त पड़ी लहरों के साथ लहरा-फहरा रही हैं। न जाने कितने काल दुकाल बन दबे पड़े हैं जो हजारों-लाखों पन्नों के सुकाल इतिहास की ओट में अंगड़ाई लेकर बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और हम अपनी ही आंखों के सामने उस दृश्यवान को भी अदृश्य होते देख रहे हैं। विधि की इस विडम्बना को कौन जान पायेगा?

-शेष अगले अंक में

कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' का सम्मान

साहित्यकार कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' को 13 अगस्त सिन्धु दिवस के उपलक्ष्य में संकुल हॉल, कालिदास अकादमी, उज्जैन में सिन्धु जागृत समाज व सिन्धी साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित समारोह में उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक उपलब्धियों के लिए विशेष अतिथि माननीय जिलाधीश, उज्जैन संकेत भोंडवे द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान कर 'सिन्धु प्रतिभा सम्मान' से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि अलखमेहर धाम के स्वामी आतमदासजी महाराज एवं संरक्षक शिवा कोटवानी की उपस्थिति में सम्पन्न इस कार्यक्रम का संचालन सचिव दौलत खेमचंदानी ने किया।

-प्रस्तुति : आशागंगा प्रमोद शिरढोणकर

गोइन्का राजस्थानी पुरस्कारों की घोषणा

कमला गोइन्का फाऊण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्यामसुन्दर गोइन्का के अनुसार राजस्थान के विभिन्न विद्वानों को आगामी 8 अक्टूबर को जयपुर में आयोजित समारोह में पुरस्कृत किया जाएगा। समारोह में डॉ. जहूर खान मेहर को 'गोइन्का राजस्थानी साहित्य सारस्वत सम्मान', चेतन स्वामी को उनकी कृति 'इंदरधनख' के लिए 'मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार', श्रीमती जेब्रा रशीद को उनकी कृति 'कदै तांई' के लिए 'रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत महिला साहित्यकार पुरस्कार', श्याम महर्षि को 'रावत सारस्वत पत्रकारिता सम्मान' तथा शीतल दुग्गड़ को 'राजस्थान अनमोल रत्न सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा।

हे क्षमा सिंधु ! हे क्षमा वीर !!

-बालकवि बैरागी-

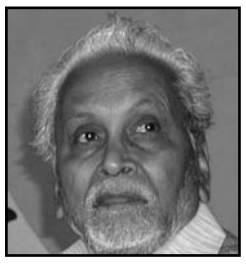

(एक)

माया ममता लोभ-मोह के फंदों में हूं फंसा हुआ।
परिग्रह के गहरे दलदल में मैं भी हूं कुछ धंसा हुआ।।
कुछ भूलें तो अनायास ही अनचाहे हो जाती हैं।
घर धंधों में जैन चेतना कभी-कभी सो जाती है।।
अपनी भूलों के शूलों पर बार-बार पछताया हूं।
क्षमा वीर ! मैं क्षमा पर्व पर क्षमा मांगने आया हूं।।

(दो)

तन से मन से और वचन से भूलें मैं भी करता हूं।
कभी-कभी लालच में आकर जीते जी ही मरता हूं।।
संसारी घरबारी जीवन अक्सर भटका देता है।
राग द्वेष और काम क्रोध की कलियां चटखा देता है।।
हे महावीर के अनुगामी ! इस याचक पर यह कृपा करो।
क्षमा पर्व पर क्षमा दंड देकर के मुझ को क्षमा करो।।

निर्भय मीरां और जैन लोक का पारदर्शी मन

विचित्र चरित्र की सृष्टि :

'निर्भय मीरां' डॉ. महेन्द्र भानावत की वर्षों की साधना का फल है। उन्होंने मीरां से सम्बद्ध स्थानों का भ्रमण किया। सम्बद्ध सामग्रियों का संकलन किया और उसे एक माला के रूप में गूंथा। ब्रज-यात्रा बड़ी मोहक है। यद्यपि ऐतिहासिक विसंगतियां तो दिखती ही हैं पर मीरां जैसे चरित्र के बारे में जो रचा गया है उसमें विसंगतियां अपने आप धुल जाती हैं।

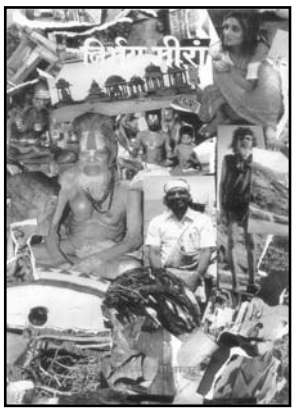

निर्भय मीरां ने एक विचित्र चरित्र की सृष्टि की है। मृणाल सूत्र की तरह कोमल और वज्र की तरह कठोर। मीरां के वैवाहिक साहचर्य एवं भोजराज का चरित्र बड़ी उदारता के साथ उजागर किया है।

मीरां की तीर्थयात्राओं और साधु-संगतों के साथ भक्ति का संदेश पहुंचाने का विवरण बहुत महत्वपूर्ण है। भानावतजी ने मीरां के कवि पक्ष पर प्रकाश नहीं डाला। इसका रहस्य समझ में नहीं आता। यही एक बात खटकती है। पर जो भी हो 'निर्भय मीरां' एक सरस जीवनी के रूप में पठनीय एवं सराहनीय है। - डॉ. विद्यानिवास मिश्र

अनेक नवीन उद्‌भावनाओं की खोज :

'निर्भय मीरां' पुस्तक नहीं एक खोज है। मीरां को हृदय की आंखों से अनुभूत कराने का प्रयास है। इसमें अनेक नवीन उद्‌भावनाओं को जन्म मिला है तथा अनेक नवीन तथ्य सामने आये हैं। यात्रा शैली में मीरां का यह जीवन वृत्त लोकानुभूतियों का स्पर्श लिए है। गांव में बहती गंगा सी भाषा अनेक आंचलिक भाषा-संदर्भ लिए है।

- डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर

तिलस्म की किताब :

'निर्भय मीरां' को मैंने उसी आवेग और असमंजस के साथ पढ़ा है जैसे मैं कोई तिलस्म की किताब पढ़ रहा हूं। उस स्त्री को जिसने अपनी असाधारण आकुलता और तृष्णा की शान्ति के लिए पृथ्वी-आकाश एक कर दिये उसे महेन्द्र भी गिरि, कानन, नदी, निर्झर, समुद्र, तीर्थों, मन्दिरों में ढूंढने गये। अपनी देह का समुद्रार्पण क्या मीरां की पराजय थी? शरीर और मन दोनों में से कौन हार गया? महेन्द्र ने इस पुस्तक में जैसी सरल सुबोध ग्रामांचलों की साधुभाषा का प्रयोग किया है वह ज्यादा देखने को नहीं मिलता। -नंद चतुर्वेदी

सात्विक शुचिता का निर्वाह :

'निर्भय मीरां' में महीयसी मीरां के जीवन, उसके व्यक्तित्व और चरित्र को कहीं कोई आंच नहीं आई है। उसकी सात्विक सनातन शुचिता का पूरा निर्वाह किया है। यह पुस्तक रोचक उपन्यास का सा आनन्द देती है। अपने गुरु के साथ महल के पिछले दरवाजे से पलायन करने का प्रभाव पचासों वर्जनाओं के बाद आज तक समाज पर मौजूद है। लोग अपनी कन्याओं का नाम मीरां रखने से कतराते हैं। लोकजीवन में आज भी मीरां तानाकशी और फब्तियों के तौर पर वापरा जाने वाला शब्द है। मीरां के प्रति श्रद्धा का जो ज्वार आज जनजीवन में व्याप्त है उसमें यह परिश्रम एक द्वीप की तरह सिद्ध है। - बालकवि बैरागी

नया किंतु संशोधित नजरिया :

मुझे मीरां के जीवन-कवन के विषय में एक नया किंतु संशोधित नजरिया प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मीरां की रचनाओं के विषय में लेखक का यह निरीक्षण कि वे अनेक समकालीन-अनुकालीन रचनाकारों द्वारा अनुप्राणित एवं अनुसृजित हैं, मेरे लिए अवश्य ही अवसादप्रेरक सूचना है किंतु सत्य को चाहे कितना ही अरुचिकर क्यों न हो, नकारा भी तो नहीं जा सकता।

डॉ. भानावत से उदयपुर में राजस्थान साहित्य अकादमी के गरिमापूर्ण समारोह में मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। समयाभाव था किंतु उनके घर जाकर मिलने की ललक भी कभी मीरां ही कार्यान्वित करेंगी। यही ग्रंथ 1995 के इर्दगिर्द पढ़ा होता तो उसको आधार बनाकर रोचक उपन्यास लिख देता...... जैसा मेरा भाग्य!

-डॉ. केशुभाई देसाई

जैनधर्म को लोकधर्म बनाते हुए :

जैन विद्या शोध प्रतिष्ठान चैन्नई द्वारा प्रकाशित डॉ. महेन्द्र भानावत, उदयपुर की सद्य प्रकाशित कृति 'जैन लोक का पारदर्शी मन' पढ़ने का अवसर मिला। भारतीय लोककला मण्डल उदयपुर से लम्बे समय से जुड़े भानावतजी लोकपरम्परा और लोकसाहित्य के सर्वमान्य मूर्धन्य विद्वान हैं। उनकी यह कृति जैनधर्म को लोकधर्म बताते हुए प्रकाशित हुई है। वे कहते हैं जैनधर्म जन-जन का धर्म है और जीवन का धर्म है। जैन आगम व इतिहास इस तथ्य के साक्षी रहे हैं कि जैनधर्म में जाति या वर्ण से पहले लोकपक्ष को रखा गया है।

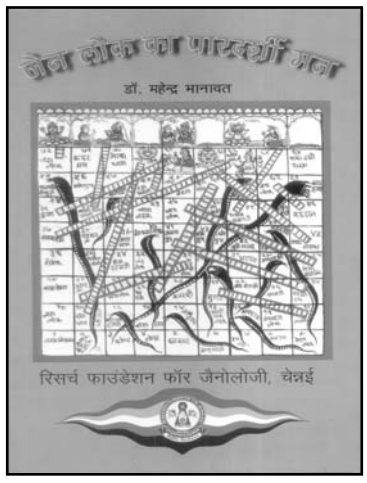

पुस्तक में 21 विभिन्न अध्यायों में विस्तारपूर्वक जैनधर्म से जुड़े संतों, जैनधर्म की परम्पराओं और आचरणों का बड़े अच्छे तरीके से विश्लेषण किया गया है। जैन मंदिरों की स्थापत्य कला के बारे में विस्तृत उल्लेख के साथ जैन प्रतिमाओं के निर्माण पर भी प्रकाश डाला गया है। इस सम्बंध में वैदिक श्लोकों तथा जैन आगमों में वर्णित अंशों के साथ समसामयिक कहावतों का भी उल्लेख किया गया है।

भगवान ऋषभदेव की परम्परा से जैनधर्म की अवधारणा मानी जाती है। उदयपुर के निकट स्थित धुलेवा का जैन मंदिर बरसों से केशरियाजी के नाम से प्रसिद्ध है। यहां बगैर किसी जाति भेदभाव के जैन श्वेताम्बर, दिगम्बर, शैव, वैष्णव, भील, आदिवासी और अन्य पिछड़ी जाति के लोगों के लिए सदैव दरबार खुला रहता है। विभिन्न राग-रागनियों से जुड़े जैन भक्ति स्तवनों, भजनों का भी उल्लेख इस कृति में हुआ है जो इसकी रोचकता और अधिक बढ़ा रहा है।

जैनधर्म में तप का बड़ा बोलबाला है। सर्वाधिक तपस्या ही इस समाज की पहचान है। जैन तप-परम्परा और क्रियाओं पर भी इस कृति में उल्लेखनीय आलेख हैं। ज्योतिष के क्षेत्र में तिथि विभाजन और उनसे जुड़े जैनपर्व भी उल्लेखनीय हैं। अभी कुछ ही दिनों पूर्व विवादास्पद रहे संथारा मरण पर शास्त्रीय उल्लेखों के साथ एक विस्तृत आलेख इस कृति में दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि 'संथारा या समाधिमरण आत्महत्या नहीं, देहत्याग है जो संसार से विरक्त होकर और शरीर के दुर्बल होने पर लिया जाता है।'

जैनदर्शन की कहानियों पर केन्द्रित एक आलेख में दी गई चन्दना राजा की कहानी और साथ ही अन्य कहानियां प्रेरणादायी हैं। जैनधर्म में स्वास्तिक की महत्ता को लेकर दिये गये आलेख में विश्व की विभिन्न परम्पराओं के पर्व विशेष की जानकारी समाहित की गई है। समय-समय पर विभिन्न जातियां जैनधर्म की अनुयायी बनीं। उन्होंने शाकाहारी और व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। ऐसी जातियां एवं जैनधर्म अंगीकार करवाने वाले आचार्यों के ऊपर दिये गये आलेख में ये बातें स्पष्ट रूप से की गई हैं कि जैनधर्म जनधर्म है। इसकी शिक्षाएं व्यक्ति विशेष के लिए न होकर मानव मात्र के लिए हैं। जो शुद्धाचरण से जीवन जीता है वह जैन है।

स्थानकवासी परम्परा के आचार्य चौथमलजी, हस्तीमलजी, गणेशीलालजी, नानालालजी और विश्व में अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता आचार्य तुलसी और उनके शिष्य महाप्रज्ञ के जीवन पर भी इस कृति में प्रकाश डाला गया है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह कृति जैनधर्म को समझने, उसके क्रियाकलापों, आचरणों, संस्कारों को जानने का एक अच्छा माध्यम बनकर आई है। इस कृति के लिए जहां डॉ. महेन्द्र भानावत बधाई के पात्र हैं वहीं रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलॉजी चैन्नई के महासचिव डॉ. एस. कृष्णचन्द्र चोरड़िया और प्रस्तावनाकार डॉ. दिलीप धींग धन्यवाद के पात्र हैं। -संदीप सृजन

जैन लोक संस्कृति का दस्तावेज :

यह पुस्तक मेवाड़ और उसके आसपास के परिवेश की जैनलोक संस्कृति का दस्तावेज है। लोक की अनेक परिभाषाओं का अंकन कर डॉ. महेन्द्र भानावत ने समग्रता से लोक के स्वरूप को उकेरने का प्रयास किया है। वे बताते हैं कि लोक वह है जो दिखावे से दूर अपनी सहज और परिपाटीगत प्रवृत्तियों की पगडंडी पर निर्बाध चलता है। उसके आचार-विचार के सम्पादन के मूल में सामुदायिक मंगल की वह भावना निहित होती है जो अभिजात्य अथवा संस्कृत समाज में केवल अपने परिवार तक ही सीमित रहती है।

21 अध्यायों में लेखक ने अपने अनुभवों से योजित लोकजीवन में रची-बसी जैन परम्पराओं को, पर्वों को और संत-जीवन को अपनी अंकनी का विषय बनाया है। जैन लोककला, देशी जैन संगीत, स्वप्न, तपस्वी जीवन, मृत्यु पूर्व मंगल मरण की दर्शना, कथा-कहानियों में जैनत्व परिदर्शन, कठपुतलियों में महावीर सुगीन चेतना, जैनेत्तर जातियों में जैनत्व की प्रभावना सम्बन्धी समीक्षात्मक विचारों से परिपूर्ण लेखों का निबन्धन भी किया गया है। 'बाल दीक्षा : बुराई नहीं' शीर्षक के अन्तर्गत कहा गया है कि बाल-दीक्षा सार्थक जीवन की सफल परिणति है। 8 से 11 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेने वाले जीवन में अधिक सफल, अधिक प्रतिभावान तथा आदर्शवान रहे हैं।

बाल-दीक्षा की परम्परा न केवल जैनों में अपितु बौद्धों, ईसाइयों, वैष्णवों, रामस्नेहियों तथा अन्य धर्मसंघों एवं सम्प्रदायों में भी देखने को मिलती है। अन्त में लेखक ने जैन दिवाकर चौथमलजी, आचार्य हस्तीमलजी, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी, आचार्य गणेशीलालजी, आचार्य नानालालजी से सम्बद्ध अनुभवों को स्वतंत्र अध्यायों में व्यक्त किया है। - डॉ. श्वेता जैन

बुलंदप्रभा का विजयसिंह 'पथिक' विशेषांक

ऐसी पत्र-पत्रिकाएं बहुत कम हैं जिनके विशेषांक लम्बे समय तक के लिए संग्रहणीय होते हैं और जो अपनी शोधपरक सामग्री के लिए अन्यों की भी प्रेरणा बनती हों। इस दृष्टि से 4 / 75, सिविल लाइन्स, टेलीफोन केन्द्र के पीछे, उत्तरप्रदेश के बुलंदशहर से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'बुलन्दप्रभा' उल्लेखनीय है। जनवरी-जून 2017 का यह अंक क्रांतिवीर विजयसिंह 'पथिक' पर केंद्रित है।

संपादक डॉ. अनूपसिंह ने पथिकजी का मूल्यांकन करते अपनी टीप में लिखा- 'पथिकजी अपने छोटे से गांव गुठावली (बुलंदशहर) से चले और राजस्थान जा पहुंचे और जन पीड़ा में अपना सबकुछ गंवा दिया। वे गांधीजी के पदचिन्हों पर चलने वाले सर्वमान्य नेता नहीं हैं न ही नेहरु, पटेल की तरह राजनीतिज्ञ। वे बेरिस्टर भी नहीं हैं और न ही उच्चकोटि के अध्यापक। वे साधारण किस्म के शांति, क्रांति और राष्ट्रीयता के पुजारी हैं।' गांधीजी से लेकर उस काल के सभी दिग्गज नेताओं से पथिकजी का सम्पर्क था। गांधीजी ने उनके लिए लिखा ही था- 'पथिक काम करने वाला व्यक्ति है जबकि दूसरे सब लोग बातूनी हैं। पथिक सैनिक बहादुर और जोशीला है परन्तु जिद्दी है।'

डॉ. अनूपसिंह ने अपनी टीप के अंत में यह प्रश्न उठाया कि 'पथिकजी मैथिलीशरण गुप्त या माखनलाल चतुर्वेदी नहीं हैं। वे तो पथिक हैं। उन्हें राष्ट्रकवि बनने से क्यों रोका गया? यह प्रश्न मेरा नहीं, बुलंदप्रभा का है।' साहित्य संस्कृति कला राजनीति आदि का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति का अन्य क्षेत्रों में भी विशिष्ट योगदान रहा किन्तु उनकी ख्याति किसी एक क्षेत्र में ही दर्ज हुई। सच है, पथिकजी ने साहित्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। जेल के अन्दर और बाहर रहकर उन्होंने जिस विपुल मात्रा में सृजन किया वह अप्रकाशित है किन्तु जो लेखन काव्य, कहानी, नाटक, भाषण संग्रह प्रकाशित हैं, उनकी प्रसिद्धि भी उस रूप में नहीं हुई। प्रसिद्धि एक स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी क्रांतिकारी नेता के रूप में हुई और चूंकि उनका कर्मक्षेत्र राजस्थान रहा इसलिए यहां के कण-कण, जन-जन में उनके बहुआयामी संघर्षशील व्यक्तित्व की छाप अंकित है। उस दौर के व्यक्ति आज भी पथिकजी के योगदान को विशेष श्रद्धा-सम्मानपूर्वक स्मरण किये हैं और तब प्रभातफेरियों में बड़े जोश और गर्व के साथ उनकी लिखी ये पंक्तियां उच्चरित की जाती थीं-

प्राण मित्रों भले ही गंवाना।
पर न यह झंडा नीचे झुकाना।।
यश वैभव की चाह नहीं।
परवाह नहीं जीवन न रहे।।
यदि इच्छा है तो यह है
जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे।।

पथिकजी ने राजस्थान केसरी, नवीन राजस्थान, तरुण राजस्थान, राजस्थान संदेश, नव संदेश नामक पत्रों का सम्पादन किया। राजस्थान से उस दौर निकले कई ग्रंथ हैं जिनमें पथिकजी के योगदान को रेखांकित किया गया है। बुलंदप्रभा के सौ से अधिक पृष्ठों के विशेषांक के अतिथि संपादक राजीवसिंह 'वीर गुर्जर' हैं जिन्होंने बड़ी सूझबूझ और परिश्रम से इस अंक को श्रेष्ठ बनाया है। डॉ. चन्द्रपाल शर्मा, राजकुमार भाटी, ओमकुमार भाटी, सुषमासिंह, रमेश 'प्रसून', डॉ. शशिकिरण गुप्ता, क्षेमचन्द्र सुमन, बनारसीदास चतुर्वेदी, घनश्याम 'शलभ' द्वारा लिखित पथिकजी विषयक विभिन्न आलेख कई तरह की जानकारियों से समृद्ध हैं। डॉ. हरेन्द्रसिंह ने पथिकजी के राजनैतिक जीवन तथा राजस्थान में उनके किसान आंदोलनों में योगदान को लेकर शोधप्रबंध लिखा। सुविज्ञ साहित्यकार डॉ. कमलकिशोर गोयनका ने इस विशेषांक को 'ऐतिहासिक प्रयास' कहा जो सर्वथा उचित ही है। - डॉ. कहानी भानावत

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 सितम्बर 2017

सम्पादकीय

तीन तलाक के बहाने

तीन तलाक अवैध होने का सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय पिछले चौदह सौ वर्षों से चले आ रहे अनैतिक निर्णय को गहरे खादरे में दफनाने जैसा है। इससे मुस्लिम महिला समाज में ही नहीं, उनसे हमदर्दी रखने वाले इतर समाज की महिलाओं में भी हर्षातिरेक है। कुछेक मुल्ला मौलवी हो सकते हैं जिनका पाखण्ड इस निर्णय से पत्झरित हुआ हो।

आजादी के बाद महिलाओं के सशक्तिकरण तथा पुरुषों के समकक्ष उनके सम्मान को बढ़ावा देने के बड़े प्रयत्न हुए हैं पर लग रहा है ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया। अभी भी उनसे जुड़ी अनेक समस्याएं फुफकार मार रही हैं पर हमारे देश की अच्छाई यह है कि वह सदैव आशावादी रहा है।

कईबार लगता है कि पुरुषों द्वारा कहे गये महिला वर्चस्व के सारे कथन मात्र कथन ही हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को यह नहीं लिखना पड़ता-

नर कृत सारे ही बंधन, हैं नारी को ही लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाएं, पहले से कर बैठे नर।।

नारी की अभ्यर्थना सभी ने की है। वे प्रशंसा के लिए की गई हैं या उन्हें पटाने के लिए।

एकबार कवि रामरिख मनहर से किसी ने यह सवाल किया तो मनहरजी ने अपनी प्रकृति के अनुसार एक बड़ी हंसी का ठहाका ही लगा दिया। प्रश्नकर्ता को चाहे कोई समाधान नहीं मिला हो किन्तु मनहरजी की बेतरतीब हंसी उस बरसाती ओटे की तरह अपनी फुहार अवश्य दे गई।

कविवर गोपालप्रसाद व्यास तो अपनी स्त्रीवाची कविताओं के माध्यम से पत्नीवाद के प्रवर्तक ही हो गये थे। उनकी 'पत्नी को परमेश्वर मानो' तथा 'सलवार चली' कविताओं की लम्बे समय तक कवि सम्मेलनों में धूम रही।

आजादी के सत्तर वर्ष बाद भी अपने ही घर में अब अपना राज होते हुए भी हम महिलाओं की आड़ लेकर आदर्शवादी बने हुए हैं। अभी भी बहुत सारी महिलाएं विशिष्ट पद पर होती हुई भी बे-हद बनी हुई हैं। वे बाहरी दुनियां में अपनी पताका फहराती दिख अवश्य रही हैं पर उनकी चलत डोर या कि चाबुक उनके पतियों के पास है।

इन सबके बावजूद महिलाएं मजबूत हुई हैं। अधिक चेतनाशील हुई हैं। घर की देहरी से बाहर का उनका संसार अधिक फैला है और देखते रहिए, आने वाला समय उनके मुख के आगे माइक का होगा जिससे आपको सुनने को मिलेगा - 'हम भी किसी से कमतर नहीं हैं।'

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन 15 जून 2017, पृष्ठ दो पर अनिल भानावत : ज्योतिष वाले स्वामीजी हेतु आपने लिखा ज्योतिष ही उनकी कमाई है। झुंझुनूं में मेरे पिताजी पं. प्रहलादरायजी महमियां को ज्योतिषी बाबाजी कहा जाता था। उनका जनम 1910 एवं निधन 27 जून 1986 को हुआ। अनिलजी की भांति मात्र ज्योतिष या जन्मपत्र बनाना ही उनकी कमाई नहीं किंतु वे कर्मकांडी पंडित भी थे। प्रात: 5 बजे से रात्रि 11 बजे तक मुहूर्त इत्यादि पूछने वालों का तांता हमारे घर पर लगा ही रहता था सो अन्त के चार वर्षों में मेरी पत्नी सत्यवती महमियां निरन्तर उनकी सेवा में झुंझुनूं रही। यद्यपि घूंघट निकालती थी तथा उनसे बोलती भी नहीं थी। वह फुलका सेकती और रसोई की खिड़की के किंवाड़ आड़े-टेढ़े कर देखती रहती कि उनके पास भीड़ नहीं हो तो फुलका-साग दे आए। इतने में ही कोई आ जाता तो दूसरा, तीसरा अथवा चौथा फलका भी बनाती। बाबाजी तो मात्र एक फुलका ही खाते थे। इच्छानुसार कभी बाजरे की खिचड़ी, कभी गुड़ियाणी, कभी इमत्याणा, कभी अमरस बनाती थी। उनका स्वास्थ्य थोड़ा ठीक हुआ तो घंटा दो घंटा बाहर भी जाते एवं देर रात्रि तक जन्मपत्र बनाते। अंतिम दिवस भी स्वयं की धोती धोई। कभी रुग्ण नहीं रहे। पेट नहीं निकला, एक टाइम ही भोजन करते।

लखनऊ की डॉ. विद्याविन्दुसिंह द्वारा सम्पादित पुस्तक 'सन्त विवेक-2017' में डॉ. महेन्द्रजी भानावत का लेख 'भूख न मांगे स्वादड़ो, नींद न मांगे सेज' पढ़ा। उसमें उन्होंने प्रश्न किया- यदि स्तनों में दूध नहीं उतरे तो नवजात की क्या गति हो? मेरा जन्म 1 नवम्बर 1934 को हुआ तब मेरी मां के स्तनों में भी दूध नहीं उतरा। पास में ही डाकिये की पत्नी जाटनी (किसान) को भी पुत्र हुआ। वह एक स्तन मुझे एवं दूसरा निजी पुत्र को देती। यों मैं जाटनी के दूध पर पला। मेरी मां ने ही मेरा नाम अम्बु रखा क्योंकि अम्बिकाचरण जैसा लम्बा नाम वह बोल नहीं पाती।

- अम्बु शर्मा, कोलकाता

सांवत्सरिक क्षमापना

सब जीवों से क्षमा चाहता
मन वच काय क्षमा करिये।
मैत्री भाव हो सकल जीव से
घनानंद भव-सर भरिये।।

- शब्द रंजन परिवार

कान्यो-मान्यो

गाळ्यां अमरित दै तो ज्हैर भी उगळै

भारती समाज मांय गाळ्यां री भरमार मिलै। फोड़ा ज्यूं गाळ्यां वै। ज्यूं फोड़ा री खाज मीठी लागै पण कचरौ तो फोड़ो फूटण रौ डर अर नीं कचरौ तो रैणी नी आवै। त्यूंई गाळ्यां दैवण नै ठीक नी मानै पण दैयां वनां रै भी नी सकै। गाळी खावण वाळो अर गाळी दैवण वाळो दोई नाराजगी लै पण न खावणे वनां रैणी आवै न दैवण वनां चैन पड़ै।

कान्यो बोल्यो आज री चौपाल मांय गाळ्यां माथै मंथण करां तो पतो लागै कै गाळ्यां प्यार मांय दी जावै तो गुस्सा मांय भी। प्यार मांय पोबारा वै जावै तो गुस्सा मांय लट्ठ चाल जावै। हाड़क्यां टूट जावै। आपसी रिश्ता कण-कण वै जावै। दसमणी बढ़ जावै तो पींड्यां तांई चालती रै। लुगायां केवै के माल खा माटी रौ नै गीत गावै वीरा रा। आदवास्यां मांय माहेरो लावण वाळा वीरा खातर गावै कै जो दारू पी नै पेट भरै अस्यो वीरो थारै कई लागै? बैन जवाब दै कै भाई कस्यो भी वै, भाई है। वींरै खातर कोई भी ऐंडीबेंडी बात वा नी सुणनी चावै। बोल है-

दारु पीवै वो पेट भरै वो वीरो थारै कई लागै?
असापसा म्हारै सोई वै तो म्हारे वीरोसा नै कई मती कौ।

हंसी ठिठोली करण नै गाळ्यां दै तो मन री गांठां खुल जावै। घुटण मिट जावै। इण खातर ब्याव शाद्यां रै मौका माथै बराती गाळ्यां री फरमाइश करै। लुगायां भी पाण पै चढ़ जावै जदी गाळ्यां री गंगा बैती लागै। केई बायां मुहावरेदार गाळ्यां दै अर ब्याई सगा नै फंफोड़ नाकै। केई लोगां री जबान माथै गाळ्यां हर टैम सोभै। वात-वात मांय गाळ्यां चाट मसाला ज्यूं बातां रौ ठाठ बढ़ावै। मजो दस गुणे करदै।

गाळ्यां ओखद रौ काम भी करै। घणाखरा गाळ्यां नी खावै तो चैन नी पड़ै। गाळ्यां सूं केई काम फटाफट वै जावै। गाळ्यां व्यंग्य मांय दी जावै तो विनोद मांय भी दी जावै। केई लोगां री गाळ्यां खुराक वै। वांनै गाळ्यां वनां अटपटो लागै। गाळ्यां गोल्यां रौ काम करै। गाळ्यां केई ठौड़ घोड़ा रै चाबुक, हाथी रै अंकुश अर गदेड़ा रै डंडा रौ काम करै।

गाळ्यां री केई किस्मां वै। रांड, रंडवा, निपूती, अभागी, कलमुंही, वेंडीरांड, मरदूत, गेल्यो, गेलचोदो, गांड्यौ, चोदीको, मरावणो, रांड्यो, चोदूनंदन जेड़ी आम गाळ्यां है। गाळ्यां हद सूं बारै नाराजगी पैदा करै। केई सै नी सकै तो केई धूड़ ज्यूं अठ्यै सुणी वठ्यै काढ़ दै। कलात्मक लैजा मांय दुसाला में लपेट गाळ्यां सुणवा में आछी लागै। एक दांण बरदास्तगी रै बारै आपणो साभिमान जगावतो नौकर साब रै सामै हाथ जोड़ बोल्यो- 'म्हारी पगार मांय सूं पांच रिप्या कम आलीद्यौ पण हल्कोपण मती लावौ।' गाळ्यां ढाल भी बणै तो माट्यां नै मरवाय भी दै।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/
मसखरी	199/
लोकदेवता कल्लाजी	15/
अजूबा राजस्थान	60/
कोई--- कोई औरत	15/
मरवण मांडे मारणा	25/
संस्कृति के रंग	25/
लोककला : प्रयोग और प्रस्तुति	15/
मेंहदी राचणी	25/
आछी करणी पार उतरणी	20/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

खोज-खबर

एक दस्तूर रंग बंटाई का

पिछले दिनों अपने समधी की दो शादियों में जाना हुआ। दोनों में रंग बंटाई का दस्तूर करना पड़ा। अपने विवाह काल में हमारा यह पहला ही अवसर था। यह दस्तूर लड़की की शादी में उसके घर जंवाई की ओर से होता है। अपने ससुराल में पहलीबार सालाजी की दो लड़कियों का विवाह हुआ। यह दिन मई 1981 का कोई दिन था। दोनों का विवाह एक दिन, एक साथ, एक ही चंवरी में होना था। दो स्थानों पर ओवरा-ओवरी में, दोनों की माया थरपी गई। रात्रि को तोरण चटकाने के बाद जब वर को पूंख-पूंखाकर माया स्थान ले जाया गया और वहीं वधू को बिठलाकर उनका गठजोड़ किया गया। कोई बारह बजी होगी कि रंग बंटाई के दस्तूर के लिए हमारी पूछ होने लगी। यह दस्तूर जंवाई के हाथों होता है मगर सालाजी के घर तो यह पहला विवाह था अत: कोई जंवाई था नहीं इसलिए हम फूफा-फूफी को याद किया गया। हमने दोनों लड़कियों (पहले बड़ी फिर छोटी) का बारी-बारी से रंग बंटाई का दस्तूर किया। दस्तूर ही नहीं, बड़ी लड़की की शादी कराने (सासुजी का देहावसान होने से) भी हमें बैठना पड़ा।

दूसरी शादी मेरे माम्या श्वसुरजी की लड़की की थी। हिसाब से यदि मेरी सासुजी जीवित होती तो उन्हें रंग बंटाई का यह दस्तूर करना था पर उनके न होने से (उनके एकमात्र जंवाई) हमने यह दस्तूर पूरा किया। इस दस्तूर में माया स्थान पर वर-वधू के समक्ष मेंहदी बांटी जाती है। इसमें एक चकलोटे पर मेंहदी का पाला (जो पडरे में वर पक्ष की ओर से आता है) तथा पीसी हुई मेंहदी दोनों को मिलाकर नारियल से, बांटने वाले पति-पत्नी से दो गचकड़े दिलवाकर यह रस्म पूरी की जाती है। हमने यह रस्म पूरी कर ली और उसका नेग (पहले रूपया और बंटाई वाला नारियल था, अब वह नारियल तथा हैसियत के अनुसार दो रूपये से लेकर सौ रूपये तक) भी प्राप्त कर लिया। इसी मेंहदी से बाद में वर-वधू का हथलेवा जोड़ा जाता है और उसके रंग के अनुसार दोनों के वैवाहिक जीवन को नापा-तोला जाता है। मसलन मेंहदी का रंग गाढ़ा चढ़ा तो दोनों के बीच गाढ़ा प्रेम बना रहेगा। इसी प्रकार मध्यम और हल्का हथलेवा रचा, रंग चढ़ा तो उनके आपसी जीवन-संग को उस रूप से परिभाषित कर लिया जाता है। इस अवसर पर रंग बंटाई का गीत भी गया जाता है-

भण्यो-गण्यो जोसीड़ो तेड़ावो के हरखे
हथलेवो जोड़ावो
बेन बंदेवी तेवाड़ो के
बोरो सो रंग बंटावो।

इधर यह कुछ हो रहा होता है कि उधर चंवरी की तैयारी प्रारंभ करवा देते हैं-

आला लीला बांस कटावो के
चोरी चंदरावो बाई रे नो खंडी
भण्यो-गण्यो जोसीड़ो तेड़ावो के
जव ने तल रो होम करावो।

इसी प्रकार फिर हथलेवा जुड़वाया जाता है। पराये घर जा रही बाई को देने का यही सर्वश्रेष्ठ समय है। पुण्य भी इसी वक्त हथलेवे में देने का शुभ और सर्वश्रेष्ठ समझा गया है इसीलिए विवाह में नहीं आने वाले भी हथलेवे के समय अपने घरों से उठ-उठकर आते हैं और बाई हा हथलेवा भरते हैं। बाहर के लोग भी इस अवसर पर किसी के साथ अपना हथलेवा भेजते हैं। इधर गीत चलता रहता है ताकि सब लोगों को पता रहे कि किसने क्या दिया है-

दादासा दीधो अरथ भंडार के कूंच्यां
ने सूंपी ओ राज भंडार री
काकासा दीधो मजल मेवाड़ के बारा
गामां रो दीधो परगणो।

यह सबकुछ होता है बड़े द्रवित रूप में। आंखें इस समय सबकी भरी छलकी हुई होती हैं कारण कि अब तो बाई पराई हो गई और कुछ ही देर बाद तो वह आंखों से ओझल भी हो जायेगी। यह एक ऐसा वक्त होता है कि जाने वाली कन्या किसी एक की नहीं होकर सबकी होती है। इस अवसर पर जितने धारासण कन्या के माता-पिता और अन्य समधी रोते देखे जाते हैं उतने ही आंसू उन लोगों के बहते मैंने देखे हैं जो नितांत दूसरे होते हैं। सारी प्रकृति भी रोई-रोई लगती है।

गांवों में तो मैंने पूरे गांव को किसी कन्या की विदाई में पगलाते देखा है। बारी-बारी से बड़ी-बुढ़ियाओं तक को विदा होती लड़की को अपनी छाती से चिपकाये देखा है। इतने आंसुओं से तर गज-गज भर के घूंघट तो किसी की मृत्यु में भी देखने को नहीं मिलेंगे। ऐसे हृदयद्रावक मौके पर तो मैंने कई दूल्हों को भी अपने हरख में आंसू पोंछते देखा है। यह सब तो ठीक है मगर पता नहीं आज भी क्यों मेरा ध्यान रंग बंटाई दस्तूर से नहीं हट रहा है। कितनी विशाल भावना है इसके पीछे और कितना अच्छा रंग-राग! जिस जंवाई ने जो आदर्श रंग प्राप्त किया है वही आदर्श रंग इस बिटिया के जीवन का अंग बने।

जन्मकुण्डली का सच

स्वरूप व्यास उदयपुर के रहने वाले थे। यदि यहीं रहते तो वे स्वतंत्रता सेनानी होते पर तब ही बंबई जाकर वाणी विज्ञ बन गये और फिल्म्स डिवीजन में लम्बे समय तक अपनी वाणी का प्रभाव दिखाते कोई पांच हजार डोक्युमेंट्री फिल्मों में सबकी आंखों के तारे बन गये। उनके साथ मेरे कई दिलचस्प संस्मरण हैं। आखिरी दिनों में वे उदयपुर आ गये तब उनसे गहरा जुड़ाव बना।

व्यासजी अच्छे ज्योतिषी थे। जनमपत्री तो कम ही देखते मगर उनका वाणी का प्रभाव ही मुझे अधिक अचरज देने वाला लगा। तीन जुलाई 1976 को मैंने अपनी लिखी भारतीय लोककला मंडल से प्रकाशित 'मेंहदी रंच राची' पुस्तक भेंट की जिसमें लिखा- 'मेंहदी तो मैंने दी अपनी कलमों में पर जिनने मेरे जीवन को ही रंग दिया, रूप दिया ऐसा स्वरूप कितनों में है? जंग लिया लेने को, देने गंग दिया।' वे अच्छे वाणी नाट्य लिखते और उन्हें कलाकारों से मंचित भी करवाते। उनके साथ रह मैंने भी 'अमृतपुत्र जयप्रकाश' नाम से एक वाणी नाट्य लिखा। यह पुस्तिका प्रकाशित हुई। कलामंडल के पास पंचवटी में उनका मकान था। मैं वहां भी जाता रहता और ज्योतिषमूलक बातें होतीं। कई लोग भी उनके पास आते। उनके छोटे भाई चेतन व्यास भी शिक्षक के साथ ज्योतिष में भी दखल रखते थे।

18 जुलाई 1976 संध्या साढ़े छह बजे उन्होंने मुझसे मेरी जन्मकुंडली मांगी। मेरे पास नहीं थी सो उन्होंने बताया कि यहां सत्कार होटल में एक बहुत बड़े ज्योतिषी आये हुए हैं। उनसे मिलने जाना है सो मैं भी अपनी जन्मकुंडली को लेकर उनके साथ चलूंगा। स्वरूपजी के पास ही आलोक स्कूल है। उसके पास की सड़क पर हम 21 जुलाई रात्रि को नौ बजे घूम रहे थे। घूमते हुए अचानक उन्होंने बताया कि 8 अप्रेल 1977 का आने वाला दिन देवीलालजी सामर के लिए किसी विशिष्ट घटना को घटित करेगा। स्वरूपजी का सामरजी से घनिष्ट संबंध था। जब भी वे उदयपुर आते, उनसे अवश्य भेंट करते। मेरी जानकारी में यह बात नहीं थी। दूसरे दिन यानी 19 जुलाई प्रात: 10 बजे हम सत्कार होटल चले गये जहां ज्योतिषी प्रो. पी. शर्मा महादेवी ठहरे हुए थे। प्रो. शर्मा हष्टपुष्ट काया लिये अच्छी कदकाठी के पुरूष थे।

मेरी जन्मपत्री देख उन्होंने कहा कि यह गलत बनी हुई है। इसमें जन्म 13 नवम्बर 1937 का दर्ज किया हुआ है जो मेरी दृष्टि में गलत है। स्वरूपजी ने मेरी ओर देखा। वे सोच में पड़ गये। मैंने सच बता दिया कि छोटीसादड़ी गुरुकुल में जब 10वीं कक्षा का फार्म भरा गया तब मैंने अन्दाज से ही अपनी जन्मतिथि लिख दी थी सो यही प्रामाणिक रूप से सही समझी जा रही है मगर शर्मा साहब ने तो मुझे सचमुच में चकित कर दिया कारण कि अब तक कइयों ने इस कुंडली को देखी मगर किसी ने यह बात नहीं बताई। शर्माजी ने मेरी जन्मतिथि का वर्ष तो वही बताया मगर 7 मार्च का दिन और समय प्रात: साढ़ा छह बजे और रविवार का दिन भी बता दिया।

शर्माजी ने बताया कि ज्योतिष में प्रारंभ से ही उनकी रुचि थी। फालतू समय में वे पंचांग देखते। किसी का हाथ देख जो कथन करते वह सच निकलता। फिर उन्होंने नौकरी छोड़ दी। उन्होंने कहा कि ज्योतिष भी परफेक्ट विज्ञान है। इससे बीमारियों का पता लग सकता है। यह आध्यात्मिक ज्ञान अधिक है। पहले जो वैद्य होते उन्हें ज्योतिष का ज्ञान तो होता ही, शास्त्र का भी प्रकांड ज्ञान होता था। एक अच्छे ज्योतिषी के लिए तंत्र-मंत्र और यंत्र की जानकारी जरूरी है।

शर्माजी सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान देते हैं। यंत्र धर्मार्थ देते हैं। कीमती पत्थरों की बजाय जड़ीबूंटी के माध्यम से सस्ता इलाज भी किया जाता है। स्वरूपजी ने बताया कि शर्माजी सिद्ध तांत्रिक, हस्तरेखा विशेषज्ञ, अंक ज्योतिष तथा फेस रीडींग के भी अच्छे जानकार हैं। दिन को स्वरूपजी घूमतेघामते मेरे दफ्तर में आ गये। हम वहां तीन-चार घंटा साथ रहे। इस बीच उन्होंने सामरजी का ऑफिस भी देखा। सामरजी उदयपुर में नहीं होकर जयपुर प्रोविडेंट फंड के सिलसिले में गये हुए थे। उनका ऑफिस देखकर उन्होंने सहसा बताया कि 23 फरवरी 1977 तक का समय उनके लिए ठीक नहीं है। मेरे साथ खोज विभाग के ही मेरे साथी माणक जारोली भी थे। हमने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। तीन दिसंबर 1981 को 70 वर्ष की उम्र में सामरजी का निधन हुआ।

सामरजी का स्वरूपजी से घनिष्ट सम्बंध ही नहीं था, समय-समय पर उनसे कलामंडल में सेवाएं भी ली गई। मैं कलामंडल की रजत जयंती पर प्रकाशित स्मारिका 'रजन्तिका' का संपादन कर रहा था तभी सामरजी ने मुझे अपने दफ्तर से एक रूक्का लिख भेजा जिसमें लिखा था- 'व्यासजी (स्वरूप व्यास) ने कलामंडल की फिल्मों में भी बड़ा सहयोग दिया है। उनकी वाणी हमारे द्वारा रचित दो फिल्मों में सुनी जा सकती है। स्वर्गीय गोविंद के अनन्य सहयोगी के रूप में उन्होंने कलामंडल का बड़ा उपकार किया है। इसका समावेश भी स्मारिका में हो सके तो अच्छा है।' **-म. भा.**

विजेता को मिली नई स्प्लेंडर बाइक

उदयपुर। उदयपुर में वोडाफोन इंडिया ने 'वोडाफोन फोन उठाओ इनाम पाओ' प्रतियोगिता के विजेता प्रवीण कुमार को इनाम के रूप में ब्रांड नई स्प्लेंडर बाइक प्रदान की गई। वोडाफोन फोन उठाओ इनाम पाओ प्रतियोगिता राजस्थान में वोडाफोन के ग्राहकों के लिए ग्राहक कनेक्ट कार्यक्रमों में से एक पहल है।

रेडियो सिटी सुपर सिंगर सीजन 9 के ग्रैंड फिनाले में दिनेश वर्मा बने विजेता

उदयपुर। भारत के सबसे बड़े सिंगिंग टैलेंट हंट लवइट चॉकलेट्स प्रजेंट्स- रेडियो सिटी सुपर सिंगर सीजन 9 ने प्रतिभागियों की संख्या के

लिहाज से सभी रिकॉर्ड्स तोड़ दिये। इस साल इस प्रतियोगिता में देशभर में सर्वाधिक संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया। लवइट चॉकलेट्स प्रजेंट्स - रेडियो सिटी सुपर सिंगर सीजन 9 ने अपने रोमांचक संगीतमय फिनाले के साथ एक बार फिर नई ऊंचाई को छुआ।

सीजन 9 का फिनाले उदयपुर में सेलिब्रेशन मॉल में आयोजित किया गया जहां शीर्ष पांच प्रतियोगियों को डॉ. पामिल मोदी, डॉ. सुरभि आर्य और अशोक गंधर्व द्वारा जज किया गया और अंत में दिनेश वर्मा को विजेता चुना गया। विजेता को पुरस्कार के तौर 50 हजार रुपये की नकद राशि प्रदान की गई।

रेडियो सिटी 91.9 एफएम के प्रोग्रामिंग, मार्केटिंग और ऑडासिटी के नेशनल हेड और ईवीपी कार्तिक कल्ला ने कहा कि रेडियो सिटी सुपर सिंगर हमारी कई प्रमुख प्रॉपर्टीज में एक है, जिसने पिछले आठ सालों में उल्लेखनीय विकास किया है। इस प्रॉपर्टी के साथ हम हर बार एक नया रिकॉर्ड बनाते हैं। साल दर साल इसमें प्रतिभागियों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह नौवां सीजन था और इस बार पूरे देश से हमें छह लाख प्रतिभागियों का जबर्दस्त रिस्पांस मिला जोकि इस माध्यम का असर और सामर्थ्य दर्शाता है।

तीन हफ्ते तक चली जोरदार प्रतियोगिता के बाद पांच शीर्ष प्रतियोगी चुने गए। इन प्रतियोगियों में अंकित चौहान, जितेंद्र गंधर्व, दिनेश वर्मा, अभिषेक शर्मा तथा प्रांजल ठाकुर शामिल थे। इन्हें प्रतिष्ठित ज्यूरी द्वारा चुना गया और बाद में डॉ. पामिल मोदी, डॉ. सुरभि आर्य और अशोक गंधर्व ने इन्हें जज किया और और दिनेश वर्मा को विजेता घोषित किया गया।

ज्ञानशाला संस्कारों की पाठशाला

उदयपुर की श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में आयोजित ज्ञानशाला शिविर में 120 बालकों तथा 35 प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया।

शासनश्री मुनि सुखलालजी ने ज्ञानशाला को संस्कारों की पाठशाला बताते हुए कहा कि बच्चों के बिना परिवार सूना तथा अधूरा है। मुनि मोहजीतकुमारजी ने बच्चों में संस्कारों के बीजारोपण के लिए ज्ञानशाला की आवश्यकता बताई जिसके माध्यम से बच्चे अच्छे ज्ञानी, ध्यानी, दीक्षार्थी, शिक्षार्थी तथा सुश्रावक बनते हैं।

ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता बैंगानी ने बताया कि शिक्षक फतहलाल जैन ने स्वागत भाषण दिया। रात्रि को सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में ज्ञानशाला नम्बर 1 ने धर्म और क्रोध, नं. 2 ने तुझ में रब दिखता है, नं. 3 ने मेरी पाठशाला, नं. 4 ने बीजी लाइफ, नं. 5 ने दर्शन ज्ञान चरित्र सुख तथा नं. 6 ने पर्यावरण आधारित एकांकी तथा एक्शन सोंग आकर्षित रहे। इस अवसर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन, सर्वाधिक उपस्थिति, श्रेष्ठ प्रशिक्षण तथा अन्यान्य क्षेत्रों में उपलब्धिप्राप्तों को पुरस्कृत किया गया।

-प्रस्तुति : सुनीता बैंगानी

एचडीएफसी बैंक 12 राज्यों में 15 लाख टीचर्स को करेगा प्रशिक्षित

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक लि. ने जीरो इन्वेस्टमेंट इनोवेशंस फॉर एजुकेशन इनीशिएटिव्स (जेडआईआईईआई) लॉन्च किया, जिसका लक्ष्य भारत के सरकारी स्कूलों में शिक्षा के स्तर में बदलाव लाना है। इस अभियान के तहत बैंक भारत के 12 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के सरकारी स्कूलों के 15 लाख टीचर्स को प्रशिक्षित करेगा।

इससे लगभग 6.2 लाख सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता बेहतर होगी और 8.3 करोड़ विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। शिक्षा बैंक की कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी का प्रमुख केंद्रण का क्षेत्र है, जिसका प्रमुख लक्ष्य सतत समुदायों का निर्माण करना है। राजस्थान में एचडीएफसी बैंक 70,000 से अधिक सरकारी स्कूलों में 2 लाख से अधिक टीचर्स का प्रशिक्षित करेगा, जिससे 81 लाख से अधिक स्कूली विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

यह अभियान मुख्य अतिथि, वासुदेव देवनानी, शिक्षा के लिए राज्यमंत्री (प्राथमिक और माध्यमिक), राजस्थान सरकार ने सुश्री नुसरत पठान, हेड - कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, एचडीएफसी बैंक, सुश्री स्मिता भगत, ब्रांच बैंकिंग हेड - नॉर्थ, एचडीएफसी बैंक, संभ्रांत, डायरेक्टर - एजुकेशन, अरविंदो सोसायटी, सत्येन मोदी, ज़ोनल हेड - राजस्थान, एचडीएफसी बैंक, मयंक अग्रवाल, हेड - ऑपरेशंस, अरविंदो

सोसायटी एवं बैंक तथा श्री अरविंदो सोसायटी के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में लॉन्च किया।

नुसरत पठान ने कहा कि एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में स्कूली शिक्षा की कुछ समस्याओं में अयोग्य टीचर्स, बहुत ऊंचा टीचर स्टूडेंट अनुपात, अपर्याप्त टीचिंग सामग्री और पुरानी टीचिंग की विधियां शामिल हैं, जिनके कारण विद्यार्थियों में मौलिक रीडिंग और राईटिंग की कला भी विकसित नहीं हो पाती है।

सामाजिक रूप से एक जिम्मेदार कॉर्पोरेट नागरिक के रूप में एचडीएफसी बैंक ने 12 राज्यों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए एक अभियान प्रारंभ किया। हम शिक्षा को प्रभावशाली, बदलते समय के अनुरूप और सभी के लिए सुलभ बनाना चाहते हैं। संभ्रांत शर्मा ने कहा कि यदि भारतीय शिक्षा व्यवस्था आने वाले सालों में विश्व की अर्थव्यवस्था के लिए अपने विद्यार्थियों को वास्तव में तैयार करना चाहती है, तो इसका एकमात्र तरीका यह है कि जमीनी स्तर पर जाकर इनोवेशन तलाशा जाए और शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए उसे पैमानाबद्ध किया जाए। जेडआईआईईआई इसका समाधान प्रदान करता है।

कहावतों के कहकहे (2)

(7) बेटों तो कमावै चार पौर नै ब्याज चड़ै आठ पौर
(8) पयो वै तो कै करै वैर नै कै करै बैर (औरत)
(9) कंकू रै पगल्ये आवै नै कंकू रै पगल्ये जावै
(10) सौ बरस रौ हलावटी नै बारा बरस रौ घर धणी
(11) कबजो हांचो झगड़ो झूठो
(12) आदमी तंग व्है तो जंग व्है
(13) थोड़ी पूंजी घणा नै खा
(14) खेती धणिया सेती
(15) थाप रै मारे पाणी कई कोरे वै
(16) चोखा री कणी नै भाला री अणी बरोबर
(17) पराई तो भादवेई नी डाकै
(18) भागवाना रै भूत कमावै
(19) नार रौ पीयावे नै छाली रौ बैठणो
(20) चोर चोरीऊं जावै हाथा फेरीऊं नी जावै
(21) गू रौ भाई पाद
(22) माटी मोल्यो वै जदी उंदरोई भांपण्यां मारै
(23) पाणी छाणै जनै राम छाणै
(24) नावै धोवै चूतिया नै तलक करै बेईमान
(25) टेगड़ा भेरा पींपरा खा
(26) मूंडै मीठौ नै परपूटै पीठौ
(27) वीगो-वीगो बोले नै कम-कम तोलै
(28) आप पीधा, आपरा बळद पीधा नै कुड़ो धसो भलेई
(29) धोवो तौ नीचोवणोई पड़ै
(30) सात बेटा री मां नै सियाला खावै नै एक बेटा री मां खंखेर नै बळै
(31) हांगता वचै हाथ मांडे
(32) जाया गोरा नी व्या तौ नाया कई गोरा वै
(33) जाट बिगाड्या दो जणा जांगा और जसनाथ
(34) फूल री जगां पांखड़ी
(35) जटकै चूड़ो फूटग्यो नै हळको वेइग्यो हाथ
(36) रांड रंडापो काढणो चावै पण रंडवा मानै जदी
(37) ववु विधवा रै पगै लागै कै म्हारी जसी थूंई वीजै
(38) थूंई राणी मूंई राणी कुण भरैगा पाणी
(39) राजा री वरात में सब ठाकर
(40) हंगरा पैली म्हूं जनम्यो, पछै बड़ो भाई, धापाधूपी में बाप जनम्यो, पछै म्हारी माई।
अर्थ - दूध, दही, घी, छाछ। (पारसी)

चैम्पियन सैलून एण्ड अकेडमी का शुभारंभ

उदयपुर। सेलिब्रेशन मॉल में चैम्पियन सैलून एण्ड अकेडमी का शुभारंभ मांगीलालजी-भंवरीदेवी सेन द्वारा किया गया। सैलून के निदेशकत्रय दुर्गेश सेन, कमलेश सेन तथा जमनेश सेन ने बताया कि यह एक फेमेली सैलून है जहां हेयर कट, हेयर डिजाइन, कलर, हेयर ट्रीटमेन्ट किया जाएगा। साथ ही स्कीन ट्रीटमेन्ट भी होगा जिसमें सौंदर्यता और स्कीन से जुड़ी समस्याओं का निवारण होगा। इसके अलावा सेलून में टेटू, नेल आर्ट, बॉडी स्पा, हेयर एक्सटेनशन की सुविधाएं भी प्रदान की जायेंगी।

उन्होंने बताया कि सैलून के साथ यहां अकेडमी की भी शुरूआत की जा रही है। यहां कम फीस में इंटरनेशनल एज्यूकेशन के साथ ही इंटरनेशनल हेयर एण्ड ब्यूटी प्रतियोगिता का कोर्स भी किया जा सकेगा। इस कोर्स को करने के लिए अब तब लोगों को मुम्बई, दिल्ली जैसे बड़े शहरों में जाना पड़ता था और लाखों रूपये खर्च करने पड़ते थे लेकिन इस कोर्स के उदयपुर में शुरू होने से पैसों के साथ समय की भी बचत हो सकेगी और रोजगार मिल सकेगा। सेलून में रिसेप्शन ऑफिस, फीमेल हेयर कट सेक्शन, फीमेल मेनिक्योर पेडिक्योर रूम, फीमेल फेशियल रूम, फीमेल स्पा रूम, मेकअप रूम, केमिकल रूम, शैंपू सेक्शन, एकेडमी रूम, मेल हेयर कट सेक्शन, मेल मेनिक्योर पेडीक्योर रूम, मेल स्पा रूम, तथा मेल फेशियल रूम की सुविधाएं हैं।

ग्रामीण बच्चों को दिये आधुनिक शैक्षणिक उपकरण

उदयपुर। चार्टर्ड अकाउन्टेट हर्षिता जैन ने मात्र 22 साल की उम्र में ही एक सामाजिक पहल काला अक्षर का गठन किया है जो राजस्थान के दूर-दराज के गांवों में मौजूद बच्चों को आधुनिक

स्कूली शिक्षा उपलब्ध कराता है। राजस्थान में बच्चों के स्कूल छोड़ने की दर को कम करना काला अक्षर का मुख्य उद्देश्य है।

हर्षिता जैन ने कहा कि आर्थिक कारणों के अलावा और भी कई कारण हैं जिनके चलते दूर-दराज के गांवों के बच्चों को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ती है। मैंने पाया कि इन गांवों के बच्चे बहुत स्मार्ट है लेकिन पढ़ाई के पारम्परिक तरीकों और मोड्यूल्स में अक्सर रूचि खो देते हैं। जैन का मानना है कि सरकार और एनजीओ द्वारा बुनियादी सहयोग प्रदान किए जाने के बाद भी इन बच्चों में रुचि पैदा करना ज़रूरी है ताकि वे हर दिन स्कूल जाना चाहें। जैन ने बताया कि काला अक्षर खेलों पर आधारित शिक्षा का रचनात्मक दृष्टिकोण है।

इसने बच्चों के अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों के साथ भी साझेदारी की है, ताकि उन्हें बच्चों के समग्र कल्याण, पोषण सम्बन्धी ज़रूरतों और वित्तीय समावेशन के बारे में शिक्षित किया जा सके। यह स्कूलों में सक्रियता बढ़ाने के लिए स्मार्ट डिजिटल बोर्ड भी इन्सटॉल करता है। काला अक्षर ने उदयपुर ज़िले में अपनी गतिविधियां शुरू कर दी हैं और अब तक 500 छात्रों तक पहुंच चुकी है। हाल ही में उदयपुर के कदचेवस गांव में एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसे बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली। बच्चे खेल, टेक्सचर पेंटिंग आदि के माध्यम से बड़े उत्साह से सीखने की कोशिश करते हैं। काला अक्षर बड़े शहरों में स्कूलों के सीनियर विद्यार्थियों और कोरपोरेट कर्मचारियों को इस प्रोग्राम से जोड़ता है। स्कूलों के अध्यापक और समुदाय के व्यस्क लोग भी पूरे उत्साह से कालाअक्षर के साथ जुड़ रहे हैं। जैन ने कहा कि हमें विद्यार्थियों से बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली है और आने वाले समय में भी हम राजस्थान में इस तरह की अध्यापन विधियों को अपनाते रहेंगे, ताकि राज्य में बच्चों के द्वारा स्कूल बीच में छोड़ने की दर को कम किया जा सके। राजस्थान में स्कूली शिक्षा बीच में छोड़ने की दर भारत में सबसे अधिक है। काला अक्षर का अगले दो सालों में 5000 विद्यार्थियों तक पहुंचना का उद्देश्य है।

51 दिव्यांग व निर्धन जोड़े बनेंगे हमसफर

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान द्वारा 2 व 3 सितम्बर को 29वां विशाल नि:शुल्क सर्वधर्म दिव्यांग तथा निर्धन सामूहिक विवाह समारोह लियों का गुड़ा, बड़ी में धूमधाम से आयोजित किया जाएगा।

प्रेसवार्ता में संस्थान के निदेशक देवेन्द्र चौबीसा, मीडिया प्रभारी विष्णु शर्मा हितैषी, दीपक मेनारिया, दल्लाराम पटेल एवं रोहित तिवारी ने बताया कि नि:शुल्क सर्वधर्म दिव्यांग व निर्धन सामूहिक विवाह में देश के विभिन्न क्षेत्रों के 51 दिव्यांग जोड़े विवाह सूत्र में बंधेंगे। समारोह की भव्य और व्यापक तैयारियां शुरू कर दी गईं हैं।

नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि जो जोड़े विवाह सूत्र में बंधेंगे, उनमें कोई पैरों से दिव्यांग है तो कोई हाथ से अशक्त हैं। किसी जोड़े में एक दिव्यांग है तो दूसरा सकलांग। किसी का भावी जीवन साथी अपनी एक आंख से देख नहीं सकता है तो कोई पांव से अशक्त है।

मगर मन में उमंगे लेकर वे बीते कल की कड़वी यादों को भूल कर यहां से नए स्वर्णिम जीवन की शुरुआत करेंगे। विवाह समारोह में ऐसे भी जोड़े शामिल हो रहे हैं जो घुटनों के बल या घिसट-घिसट कर चलते हैं मगर अग्नि के समक्ष सात फेरे लेकर ये सभी एक-दूसरे के पूरक बनकर खुशहाल गृहस्थी की नई शुरुआत करेंगे।

श्री अग्रवाल ने बताया कि पंडित मुख्य आचार्य के मार्गदर्शन में विवाह की विधि संपन्न करवाएंगे। शनिवार 2 सितम्बर को शाम 6 बजे सजी-धजी बग्घियों में बाजे-गाजे के साथ उदयपुर के टाउन हॉल से भव्य बिंदौलियां निकलेंगी। इसमें बाराती बने परिजन और देशभर से आने वाले संस्थान के सहयोगी, अतिथि व जन समुदाय नाचते-गाते चलेंगे। रविवार 3 सितम्बर प्रात: 10 बजे बड़ी स्थित मुख्यालय पर तोरण और वरमाला की रस्म होगी। शुभ मुहूर्त में पाणिग्रहण संस्कार होगा।

श्री अग्रवाल ने बताया कि जोड़ों को गृहस्थी के लिए आवश्यक सामान के रूप में थाली, कटोरी, गिलास, स्टील की कोठी, बर्तन, कुकर, क्राकरी, सिलाई मशीन, डिनर सेट, गैस चूल्हा, कंबल, बेडसीट्स, तकिया, घड़ी, साड़ियां, पेंट-शर्ट्स, सोने का मंगलसूत्र, चांदी की पायल, बिछिया, अंगूठी आदि प्रदान किया जाएगा।

चयनित दिव्यांगों को ट्राइसाईकिल, व्हील चेयर, नारायण मोड्यूलर आर्टीफिशियल लिम्ब, बैसाखी, कैलिपर, श्रवण यंत्र, ब्रेल स्टिक व अन्य उपकरण नि:शुल्क प्रदान किए जाएंगे। श्री अग्रवाल ने बताया कि संस्थान अब तक 1250 से अधिक निर्धन एवं दिव्यांग जोड़ों की गृहस्थी बसा चुका है। अब वे बच्चों के साथ खुशहाल जिंदगी जी रहे हैं।

धर्मेश, जितेंद्र, जाकिर ने किया कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक ऑल इंडिया फाइनल्स के लिए क्वालीफाई

उदयपुर। कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक रीजनल राउंड के 3 शीर्ष विजेताओं धर्मेश शर्मा, जितेंद्र सैनी, जाकिर हुसैन ने अंतिम फेरी के लिए क्वालीफाई कर लिया है। ये तीनों सितंबर 2017 में मुंबई में आयोजित होने जा रहे ऑल इंडिया फाइनल्स में अपने हुनर का प्रदर्शन करेंगे।

कैस्ट्रॉल इंडिया के वाइस प्रेसीडेंट (मार्केटिंग) केदार आपटे ने कहा कि भारत के शीर्ष लुब्रीकैंट ब्रांडों में शुमार कैस्ट्रॉल ने दुपहिया वाहनों के स्वतंत्र मैकेनिकों को अपनी प्रतिभा व कौशल के प्रदर्शन हेतु एक खुला मंच प्रदान करने के लिए अभिनव और रोमांचक कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक कॉन्टेस्ट आरंभ किया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए देशभर से दुपहिया वाहनों के हजारों मैकेनिकों ने अपना पंजीकरण कराया।

पंजीकरण के बाद प्रतिभागियों ने रीजनल राउंड में प्रवेश पाने के लिए शुरुआती दौर की एक स्पर्धा में हिस्सा लिया। रीजनल राउंड देश के आठ विभिन्न शहरों में आयोजित होगा। जयपुर में संपन्न प्रतियोगिता में 250 से ज्यादा मैकेनिकों ने हिस्सा लिया। स्पर्धा में एक दौर प्रश्नोत्तरी का तथा दो दौर प्रैक्टिकल के थे।

प्रैक्टिकल दौर में नैदानिक और एसेम्बली राउंड का समावेश था। स्पर्धा कड़ी थी और कुशलता तथा ज्ञान के स्तर का प्रदर्शन बड़े ऊं चे दर्जे का था। यहां एक दूसरे से स्पर्धा कराने के साथ साथ सभी प्रतिभागियों को दुपहिया इंजन तकनीक के बारे में एक जानकारीपूर्ण प्रशिक्षण भी दिया गया।

श्री आपटे ने बताया कि शीर्ष तीन अखिल भारतीय विजेताओं को भारत के कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक्स के रूप में पहचाने जाने का सम्मान मिलेगा। ये तीनों विजेता कैस्ट्रॉल एशिया पैसिफिक मैकेनिक कॉन्टेस्ट में भाग लेने के हकदार होंगे, जो नवंबर 2017 में थाइलैंड की राजधानी बैंकाक में आयोजित होगी। कैस्ट्रॉल एशिया पैसिफिक मैकेनिक कॉन्टेस्ट में 6 देशों के प्रतिभागी स्पर्धा करेंगे।

हिन्द जिंक़ 'ग्लोबल सस्टेनबिलिटी अवार्ड' से सम्मानित

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक़ की इकाई कायड़ माइन को वर्ष 2017 में ऊर्जा एवं पर्यावरण क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए गोल्ड केटेगरी में 'ग्लोबल सस्टेनबिलिटी अवार्ड-2017' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान 8वें वर्ल्ड रिन्वयूबल एनर्जी टेक्नोलॉजी कांग्रेस एण्ड एक्सपो-2017 द्वारा कन्वेशन सेन्टर-एनडीसीसी, नयी दिल्ली में आयोजित एक समारोह में भारत सरकार के रिन्वयूबल एनर्जी, वन एवं पर्यावरण मंत्रालय की एनर्जी एण्ड एन्वायरमेंट फाउण्डेशन की ज्यूरी द्वारा बी.एस. राठौड़, यूनिट हेड-कायड़ माइन को प्रदान किया। हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि सस्टेनबिलिटी अवार्ड की प्रामाणिकता हिन्दुस्तान जिंक़ के पर्यावरण, सुरक्षा, सामाजिक विकास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में निरन्तर प्रयासों को प्रमाणित करता है।

उदयपुर में गणेश चतुर्थी पर की गई 11 लाख 11 हजार रूपये के नोटों की आंगी।

फोटो - राजेन्द्र हिलोरिया

लोक प्रतीक की सत्ता अस्मिता

-बसंत निरगुणे-

भारतीय संस्कृति में पांच प्रतीक बहुत अधिक प्रचलित हैं। इनका प्रयोग शास्त्र और लोक दोनों में बराबरी से प्रचलित है। ये पांच प्रतीक हैं- (1) दीप (2) कमल (3) वटवृक्ष (4) स्वस्तिक और (5) ओम हैं। इन पांचों प्रतीकों के पारम्परिक अर्थ हैं।

दीप ज्ञान और प्रकाश का, कमल सृष्टि, उत्पत्ति, जन्म और विकास का, वटवृक्ष स्थिरता, विशालता और औदार्य का, स्वस्तिक कल्याण और शुभ का तथा ओम ध्वनि एवं नाद के उद्‌गम का प्रतीक है। जीवन की प्रत्येक अभिव्यक्ति में प्रतीकों का सहारा लेना पड़ता है।

अनुभव-पथ में जो भी वस्तु आती है उसकी अभिव्यक्ति मनुष्य प्रतीक के माध्यम से करता है। मनुष्य का अनुभव-संसार अत्यन्त विशाल है। उतना ही विशाल प्रतीक संसार भी है। मिथक साहित्य तो प्रतीकों का विशालतम भण्डार है। मिथकीय प्रतीक योजना में पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जड़-चेतन, रंग-रूप, ग्रह-नक्षत्रादि सब किसी न किसी वृत्ति-प्रवृत्ति के प्रतीक माने गये हैं।

मनुष्य ने संकल्प-विकल्प के आधार पर शुभ-अशुभ प्रतीक रचे हैं। पेड़ पर नई कोंपल का आना नये जीवन के आगमन का प्रतीक है। कोयल का बोलना वसंतागमन का प्रतीक है। आंगन में कौए का बोलना अतिथि के आने का प्रतीक है। यात्रा शुरू करने में जलपूरित घड़ा दिखना शुभ और खाली मिलना अशुभ है। बिल्ली का रास्ता काटना अशुभ, गाय का मिलना शुभ समझा जाता है। इनके पीछे लोक विश्वास की गहरी समझ अपना कार्य करती रहती है।

अभिनव गुप्त ने अ से अ: तक के स्वरों को शिव तत्व का, क से ङ तक पृथ्वी से आकाश तत्व का, च से ज तक गंध से लेकर शब्द तक का, ट से ण तक पैर से लेकर वाक् कर्मेन्द्रियों का, त से न तक घ्राण से श्रोत्र तक ज्ञानेन्द्रियों का, प से म तक वर्ण मन, अहंकार, बुद्धि, प्रकृति और पुरुष का, य से व तक राग, विद्या, कला का, स्वर बीजों के प्रतीक और व्यंजनों की योनि का प्रतीक माना है।

रंग जीवन में बहुत महत्व रखते हैं। रंगों का प्रसार प्रतीकात्मक है। लाल रंग प्रेम, शुभ, क्रोध और खतरे का, काला अशुभ, अवसाद और मृत्यु का, सफेद ज्ञान, कर्म, सात्विकता और शुचिता का, हरा समृद्धि, सम्पन्नता, शीतलता, प्रसन्नता और ऐश्वर्य का, पीला प्रकाश, व्यापकता और उदारता का, नीला गंभीरता, सहनशीलता और आकाश का, भूरा उदासीनता और पृथ्वी तत्व का, जामुनी स्थिरता और गहनता का, केशरिया त्याग, तपस्या और शौर्य का, भगवा संन्यास और अध्यात्म का प्रतीक है। रंगों का सामन्जस्य मनुष्य के शरीर, मन-मस्तिष्क और आत्मा पर गहरा प्रभाव डालता है। रंगों की पसंद-नापसंद से व्यक्ति के स्वभाव को परखा जा सकता है।

जन्म से लगाकर मृत्यु तक, धरती से आकाश तक, मृत्युलोक से स्वर्गलोक तक, आकाश से पाताल तक, संकेत से भाषा तक, असुर से देवता तक जड़ से चेतन तक, प्रकृति से पुरुष तक, धर्म से दर्शन तक, साहित्य से संस्कृति तक, सौन्दर्य से कला तक, सुन्दर से असुन्दर तक, सर्जन से विसर्जन तक, सब जगह प्रतीक लोक में प्राण वायु की तरह समाये हुए हैं। प्रतीक का जीवन्त सत्ता ही मनुष्य की सार्थक अभिव्यक्ति का मूलाधार है।

जहाँ पांडव करते है पिण्डदान

-दिनेशसिंह रावत-

हिमालय की कन्दराओं में बसे विभिन्न गाँवों में निवास करने वाले महाभारतकालीन संस्कृति एवं सभ्यता को अपने आयोजनों में रक्षित किये हुए हैं। 'सराद' व 'जग्गी' के रूप में पांडवों के नाम से लोकोत्सव मनाते हैं। सराद अर्थात् श्राद्ध का आयोजन कभी सामूहिक रूप से तो कभी व्यक्तिगत परिजन मिलकर करते हैं। सामूहिक रूप से दी जाने वाली सराद में गाँव का प्रत्येक परिवार अपना निश्चित अंशदान देता है। व्यक्ति विशेष की सराद में पूरा जिम्मा सम्बंधित परिवार को उठाना होता है। इसमें ग्रामवासी बराबर सहभागी बनते हैं। अपने आराध्य देवों के नाम से वे धन-धान्य ही दान नहीं करते बल्कि अन्य कार्यों में भी हाथ बंटाते हैं। सामूहिक रूप से दी जाने वाली सराद को 'सांझी सराद' और आयोजन स्थल को 'पंडौं की थात' कहा जाता है।

यह धार्मिक अनुष्ठान तीन दिवसीय होता है। पहले दिन शाम को लोकवाद्यों के वादक पहुंचते हैं और एक विशेष प्रकार का ताल बजाते हैं जिसे 'चासनी देना' कहा जाता है। यह सभी के लिए पहला आमंत्रण या उद्‌घोष माना जाता है। ताल को सुनते ही सभी पांडव पात्र इकट्‌ठे होते हैं। तरूण थाती पर एक ऐसा धुना रमा देते हैं, जो अगले तीन दिनों तक निरन्तर अग्नि की लपटें उडेलता रहता है जिसे 'औंड' कहते हैं। इन्हीं लपटों को साक्षी मानकर पांडव पसुवा अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं और इसकी भभकती ज्वाला पर बैठकर लोकवासियों को अपनी दैवीय शक्ति का एहसास करवाते हैं। पांडव पसुवा निराहार रहकर पहुंचते हैं और पांडव नृत्य शुरू हो जाता है।

पांडव पात्रों पर पांडव अवतरित होने लगते है। ये दैदीप्यमान शक्तियां लोहे के गदे से नंगी पीठ पर अगिनत वार करती हैं। सब गले मिलते हैं और एकल नृत्य से शुरू हो सामूहिक नृत्य का रूप ले लेते है। सभी पांडव पात्र हाथों में गंध, अक्षत, पत्र-पुष्प, दूध-दीप लेते हैं और परम्परागत शैली में लयबद्ध तरीके से अपने माता-पिता, गुरू-इष्ट, बंधु-बांधवों को स्मरण करते हैं। इसे 'छाड्या लगाना' कहा जाता है। इस प्रक्रिया के बाद धनुधारी अर्जुन जिन्हें 'खाती राजा' कहा जाता है, अपनी पूज्य माता से मंगल कलश 'औसा घड़ी' भरने का शुभमुहूर्त मांग कहता है- 'खोल मेरी माता अपड पगंडी कू सतऽ, दिया मेरी माता धरम कऽू दाऊ ।' अर्थात हे मेरी माँ! अपना अक्षय शक्ति का भण्डार खोलो और धर्म का वचन दो कि ओसाघड़ी के लिए शुभमुहूर्त क्या है तथा किस पांडव पात्र द्वारा भरी जाय।

अन्य पांडव पात्रों द्वारा चौरी के ऊपर सभी पांडवों के नाम से चावल के ढेर रखे जाते हैं जिन्हें 'पूँजी' कहा जाता है। माता का आशीषवचन पा अर्जुन के चावल की एक पूँजी को स्पर्श करते हैं। अधिकांशत: अर्जुन या नकुल का ही चयन होता है। इस प्रकार देर शाम शुरू हुआ यह उत्सव पूरी रात चलता रहता है। इसीलिए इसे 'रात काटना' कहा जाता है।

अगली सुबह ओसाघड़ी भरने के लिए दूसरे पांडव पात्र को साथ लेकर निकल पड़ता है। ओसाघड़ी को पत्र-

पुष्प, धूप-दीप, गंध, अक्षत से पूजकर विधिवत् थाती पर बने स्थान पर स्थापित कर दिया जाता है। सर्वप्रथम अर्जुन के पात्र पांच पांडवों के नाम से पाँच जोड़ी पूरी तथा फल के रूप में ही आटे की पाँच गोलियां बनाकर उन्हें शुद्ध गाय के घी के साथ तला जाता है। यह कार्य अर्जुन एवं द्रोपदी के पात्र मिलकर करते हैं। पांडव शक्तियां अग्नि परीक्षा, सबल साधना, छाड्या जैसे चरणों से गुजरती है तब गैड़ी नृत्य होता है जो अर्जुन और नागार्जुन के बीच लड़ा जाता है। इसके लिए लम्बे कद्‌दू से गैंडा तैयार किया जाता है।

कभी-कभी स्वांग नृत्य में दुर्योधन, हाथी इत्यादि के स्वांग बनाये जाते हैं। नृत्य को अधिक आनन्दमय बनाने व पांडव शक्तियों को प्रंचड करने के लिए लोकगाथाओं के गायक सम्बंधित पात्रों को उनके जीवनलीला से जुड़े सुख-दु:ख के दिनों का प्रत्यास्मर्ण करवा देते हैं जो पांडवों के लिए आग में घी का काम करता है जैसे -'माता कू बणायूँ तों ली सौ मणऽ भोजन/माता कू बणायूँ तों ली खारियों क रोट/तई थामणी बलऽ अबऽ सौ मणऽ मुंगरी/तई हारण बलऽ अबऽ दुनिया कऽ दैन्त/सुनी जागण लगी तेरी हाथऽ की मुंगरी...।' अर्थात माता ने तेरे लिए सौ मण भोजन पकाया हुआ है। तुम्हारी सौ मण की गदा अभी सुनसान पड़ी हुई है। उठो! तुम्हें वह गदा थामकर दुनिया के राक्षसों का वध करना है। ये पंक्तियां भीम से सम्बंधित हैं। 'तेरऽ होन्द बलऽ बारह भाई बाण, तू तऽ होन्दी बलऽ ऋषियों की धियाण/तू तऽ होन्दी बलऽ विश की डांकलऽ, तेर होन्द बलऽ अगनी कऽ बाण/खड़ू कर्‌रया बलऽ आपड़ु. अगनी कू कुण्ड, तेर दईज आई बलऽ कालिदास ढोली...।' अर्थात तुम ऋषियों की बहिन हो, तुम्हारे तो बारह भाई बाण हैं। तुम अपनी अग्नि के बाण और कुण्ड की शक्ति को जाग्रत करो। तुम्हारे दहैज में तो कालिदास ढोली तक आई है।

सराद के दौरान सभी पांडव पात्रों को एक विशिष्ट प्रकार का टीका दिया जाता है जिसे गाय के दूध के साथ चावल भीगोंकर तैयार किया जाता हैं। इसे 'छापू' कहा जाता है। इससे पहले पांडव पात्र अपने पुरखों को इन पंक्तियों के साथ समर्पित करते हैं - 'छापू पहुँच्या मेरू आकाश तरतरी, छापू पहुँच्या मेरू माता धरतरी/छापू पहुँच्या मेरू दिन क सूरज, छापू पहुँच्या मेरू राति क चन्द्रमा/छापू पहुँच्या मेरू हरि हरिद्वार, छापू पहुँच्या मेरू बदरी-केदार/छापू पहुँच्या मेरू पिता क औखाड़, छापू पहुँच्या मेरू माता सति कुन्ती...। अब पांडव नृत्य का एक और महत्वपूर्ण चरण आता है जिसके तहत पांडव गाँव के समीप नदी तट पर अपने पित्रों को तर्पण या पिण्डदान देने पहुंचते हैं। पिण्डदान की सामग्री को द्रोपदी तैयार करती है। यह कार्य सामान्यत: नकुल के हाथों सम्पन्न होता है। इसके बाद गैंडे को लेकर अर्जुन और नागार्जुन के बीच युद्ध आधारित नृत्य होता है। गैंडा वध के साथ नृत्य समापन की ओर होता है। सामूहिक भोज के साथ सराद का दूसरा दिन पूर्ण होता है। तीसरे दिन पांडव पात्र प्रात: थाती पर पहुंचते हैं। ओसाघड़ी में सभी पात्रों, कार्यक्रम, सराद देने वाले परिवार, गांव व क्षेत्र के कुशलक्षेम का फलादेश देखते हैं। इससे पूर्व द्रोपदी पात्र देशी घी के साथ पाँच मोटी-मोटी रोटियां बनाती हैं। इन रोटियों तथा ओसाघड़ी के साथ रखी गई पूरियों को प्रसाद स्वरूप सभी में वितरित किया जाकर लोकोत्सव सम्पन्न होता है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, **पंजीयन संख्या - RAJHIN/2016/72902,** Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।